ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका की भूमिकाः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(बिहार के बेगुसराय जिला के संदर्भ में)

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा के अन्तर्गत

समाजशास्त्र (सामाजिक–विज्ञान संकाय) में

पी–एच0डी0 उपाधि हेतु उपस्थापित

शोध–प्रारूप

वर्ष–2024

Shagufta Khanam 29/02/2024

शोध पर्यवेक्षिका
डॉ0 शगुफ्ता खानम
असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग
एम0 आर0 एम0 कॉलेज, दरभंगा

शोधार्थी
दिनेश कुमार
PAT: 2021-22
PAT Roll. - E2219029

पी–एच.डी उपाधि हेतु उपस्थापित शोध–प्रारूप

समाजशास्त्र विभाग (सामाजिक विज्ञान संकाय)

ल0 ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

1.शोध–शीर्षकः

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका की भूमिकाः एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

(बिहार के बेगुसराय जिला के संदर्भ में)

2.भूमिकाः

बिहार में पहले से ही गरीबी की मार झेल रहे बेगुसराय वासियों के लिए जीवनयापन कर पाना बहुत कठिन था। ऐसे में बड़ी संख्या में गरीब परिवार रोजी–रोटी की तलाश में बेगुसराय से दूसरे प्रदेशों की ओर पलायन करने लगे। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बिहार सरकार द्वारा जीविकोपार्जन की प्राप्ति एवं सामुदायिक विकास का कार्य 'जीविका' को सौंपा गया। इसी योजना के तहत बेगुसराय जिले में जीविका परियोजना की शुरुआत की गई। जीविका ने 2013 में बेगुसराय में अपना परिचालन शुरू किया। पहले चरण में यानी दिसंबर 2012 में बछवाड़ा, बखरी, बीरपुर, चेरियाबरियारपुर, छौराही, डंडारी, गढ़पुरा, खोदाबंदपुर, मंसूरचक, नावकोठी और साहेबपुर कमाल ब्लॉक में परिचालन शुरू किया गया था। मार्च 2014 में जीविका ने बाकी सात ब्लॉक बलिया, बेगुसराय, बरौनी, भगवानपुर, मटिहानी, शाम्हो और तेगरा में अपना काम बढ़ाया। जीविका ने स्व–चयन दृष्टिकोण के माध्यम से सभी गरीब महिलाओं को एसएचजी, वीओ और सीएलएफ जैसे समुदाय–आधारित संस्थानों में संगठित किया है। ये संस्थाएँ महिलाओं को आवाज़, स्थान और संसाधन प्रदान करती हैं।

Shagufta Khanam
29/12/2024

Dinesh Kumar
PAT- 2021-22
Roll - E2219029

01 मार्च 2014 से इस क्षेत्र को राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एस.आर. एल.एम.) के तहत कार्यान्वित किया गया। भारत सरकार द्वारा संचालित स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना को ही राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (एनआर.एल.एम.) के रूप में पूरे देश में लागू किया गया है। खास बात यह है कि पहले की योजना आपूर्ति आधारित थी जबकि नए रूप में शुरू किए गए राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन को मांग के आधार पर क्रियान्वित किया जा रहा है। इसके अलावा एस.जी. एस.वाई की व्यवस्थागत खामियों को भी इसमें दूर करने का प्रयास किया गया है।

जीविका का मूल उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की गरीब महिलाआ को स्थायी आजीविका उपलब्ध कराते हुए उन्हें सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाना है ताकि वे गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकल सकें। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु जीविका द्वारा सर्वप्रथम गाँवों का सामाजिक एवं आर्थिक आकलन करने के बाद एक समान स्तर की 10 से 15 गरीब एवं अत्यंत गरीब महिलाओं को मिलाकर एक स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.) का गठन किया जाता है। यह समूह इनके लिए एक मंच प्रदान करता है, जहाँ उनमें विभिन्न सामजिक एवं आर्थिक मुद्दों को लेकर समझ पैदा होती है और इससे उन्हें अपने जीवन स्तर में बदलाव लाने में मदद मिलती है।

समूह का गठन होने के बाद सदस्यों को विभिन्न मॉड्यूल्स का प्रशिक्षण दिया जाता है। पहले मॉड्यूल के अंतर्गत गरीबी, गरीबी का दुष्चक्र, इससे बाहर निकलने के रास्ते और स्वयं सहायता समूह की आवश्यकता आदि के बारे में बताया जाता है। इसी तरह दूसरे मॉड्यूल के तहत समूह की बैठक की प्रक्रिया, एजेंडा, समूह के नियम, बचत, लेन–देन आदि की जानकारी दी जाती है। बैठक की प्रक्रिया में प्रार्थना व परिचय जैसे विषय शामिल होते हैं। समूह की सदस्यों के द्वारा आपसी

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kumar

परिचय से वे एक दूसरे को अच्छी तरह जान–समझ पाती हैं और उनमें आपसी विश्वास एवं एकता का वातावरण पैदा होता है। साथ ही उनमें दूसरों के सामने अपनी बात रखने की क्षमता भी विकसित होती है।

मॉड्यूल तीन में नेतृत्व का महत्त्व, इसकी जिम्मेदारी और बुक्स ऑफ रिकॉर्ड की महत्ता आदि पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके बाद चौथे मॉड्यूल में समूह के कार्यों की सीमाएं एव ग्राम संगठन की आवश्यकता के बारे में बताया जाता है। इसके अतिरिक्त महिलाओं को नियमित रूप से स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वच्छता के अलावा विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। इन प्रशिक्षणों एवं जानकारियों से महिलाओं में जागरूकता एवं बौद्धिक क्षमता का स्तर बढ़ता है। परिणामस्वरूप आगे चलकर वे सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का समुचित लाभ मिलता हैं।

आर्थिक सशक्तीकरण की दिशा में जीविका महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित करती है। इसके लिए सबसे पहले उन्हें नियमित रूप से सामूहिक बचत के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। महिलाएँ अपनी सीमित आय में से जरूरी राशि बचाकर समूह स्तर पर एक समान बचत करती हैं। इसके बाद उनकी आवश्यकताओं और उनके पास उपलब्ध संसाधनों का आकलन किया जाता है एवं जरूरत के अनुरूप अतिरिक्त संसाधन मुहैया कराया जाता है ताकि वे अपने लिए कोई आजीविका शुरू कर सकें। इससे ग्रामीण स्तर पर उन्हें स्वरोजगार उपलब्ध कराने में मदद मिल रही है। जीविकोपार्जन से जुड़ी गतिविधियों में मुख्य रूप से कृषि, पशुपालन (गाय, भैंस या बकरी पालन), मुर्गी पालन, चाय, पान, सब्जी, अंडा, किराना, नाश्ते, मिठाई, कपड़े, चूड़ी आदि की छोटी दुकानें व अन्य प्रकार के छोटे–मोटे व्यवसाय शामिल हैं। इन गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के लिए

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kumar

जीविका प्रयास कर रही है ताकि ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार लाया जा सके।

जीविकोपार्जन के क्षेत्र में जीविका मूलतः कृषि, गैर कृषि और कृषि से संबद्ध क्षेत्रों में स्वरोज़गार बढ़ाने की दिशा में काम कर रही है। कृषि के क्षेत्र में परियोजना ने बेगुसराय में उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। आंकड़ों के लिहाज से देखें तो लगभग 53,344 ग्रामीण परिवारों को खेती की उन्नत विधि से जोड़ा गया है। इसके तहत महिलाओं को धान की खेती के लिए श्री (एस.आर.आई.)विधि एवं गेहूँ की खेती के लिए स्वी (एस.डब्ल्यू.आई.) विधि अपनाने के लिए सार्थक प्रयास किया गया है। इसी तरह सब्जियों के अधिक उत्पादन के लिए उन्हें मिश्रित खेती करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। समूह से जुड़ीं महिला किसानों को, जो आमतौर पर जमीन के बेहद छोटे टुकड़े में खेती करती हैं, उन्नत विधि अपनाने के लिए कई तरह के प्रोत्साहन भी दिये गये हैं। परिणामस्वरूप, बड़ी संख्या में समूह से जुड़ी महिलाएँ आधुनिक विधि से खेती करने की ओर प्रवृत्त हुई हैं। श्री विधि और स्वी विधि से खेती करने से कम लागत पर उपज में करीब दोगुनी वृद्धि हुई है। इससे किसानों की आमदनी बढ़ी है और वे अब पुनः खेती करने में रुचि लेने लगे हैं।

समूह से जुड़ी महिलाओं को मुर्गी पालन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इस क्रम में बेगुसराय में मई 2016 तक 11 मदर यूनिट की स्थापना हो चुकी है और अन्य प्रखंडों में भी मदर यूनिट की स्थापना की प्रक्रिया जारी है। प्रत्येक मदर यूनिट से 300 ग्रामीण परिवारों को मुर्गी पालन से जोड़ा जाता है। इस तरह से अब तक लगभग 3300 गरीब परिवार मुर्गी पालन गतिविधियों से जुड़ चुके हैं। सर्वेक्षण से पता चलता है कि मुर्गी पालन- गतिविधि अपनाने से महिलाओं के घर की आमदनी बढ़ने के साथ ही उसके परिवार के पोषण के स्तर में भी सुधार हुआ है।

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kuma

खेती के अलावा हजारों की संख्या में महिलाओं ने छोटे–मोटे व्यवसाय, दुकान, छोटे उद्यम आदि स्वरोजगार की दिशा में भी मजबूती के साथ कदम बढ़ाए हैं। परियोजना से जोड़कर महिलाओं को सशक्त किया गया है। आंकड़ों के मुताबिक बेगुसराय में लगभग 5 हजार से ज्यादा महिलाएँ समूह से कर्ज लेकर छोटी–छोटी दुकानें खोल रही हैं और बड़ी संख्या में अन्य महिलाएँ भी इनसे प्रेरित होकर इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। जीविका ने सामाजिक विकास तथा स्वास्थ्य एवं पोषण के क्षेत्र में भी काम किया है। बेगुसराय में जीविका के द्वारा 368 ग्राम संगठनों को खाद्य सुरक्षा निधि के तहत 1–1 लाख रुपये की राशि प्रदान की गई है। इसी तरह 361 ग्राम संगठनों को स्वास्थ्य सुरक्षा निधि की राशि उपलब्ध कराई गई है। गरीब महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण के लिए जिले में 18 CHNCC केंद्र भी खुले हैं, जहाँ गर्भवती एवं धात्री महिलाओं और छोटे बच्चों को कम कीमत पर पोषणयुक्त भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है।

3.अवधारणात्मक रूपरेखा

ग्रामीण महिला -ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाली महिलाओं को ग्रामीण महिला कहा जाता है। ग्रामीण क्षेत्र की अधिकांश महिलाएँ गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करती है साथ उनमें शिक्षा का स्तर निम्न होता है।

सशक्तिकरण -सशक्तिकरण एक सक्रिय और बहुआयामी प्रक्रिया है जो महिलाओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा और शक्तियों की पहचान करने में सहायता करती है। शक्ति को न संपादित किया जा सकता है न भीख में दिया जा सकता है बल्कि इसे प्राप्त करना होता है और जब इसे प्राप्त कर लिया जाता है तो इसका प्रयोग, संरक्षण और संवर्धन करना होता है।

Shagufta Khanam 29/02/2024

Dinesh Kum

जीविका -समाज में आर्थिक व सामाजिक बदलाव के साथ–साथ नारी सशक्तीकरण की मजबूती के लिए सरकार कई स्तरों पर योजनाओं का संचालन कर रही है। ग्राम पंचायत में 50 प्रतिशत आरक्षण लागू होने के बाद महिलाएं अपने घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर समाज का नेतृत्व संभाल रही है। इसी कड़ी में जीविका मिशन के तहत महिलाओं को जोड़कर लाभ देने की योजना बनाई गई है। इसमें उनका आर्थिक स्वाबलंबन मूल मंत्र है। महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तिकरण के लिए जीविका मिशन का गठन किया गया है।

4.अध्ययन की समस्या

प्रस्तुत शोध कार्य 'ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका की भूमिका' पर केन्द्रित है। यह एक जटिल एवं व्यापक क्षेत्र का विषय है। इसके अध्ययन में अनेक तरह की कठिनाइयों का आना स्वाभाविक है क्योंकि प्रस्तुत विषयवस्तु अनेक अध्ययनों के बावजूद आज भी बहुत व्यापक तथा अस्पष्ट है। बेगुसराय जिले में जीविका का व्यापक प्रसार हो रहा है। जिले की करीब डेढ़ लाख महिलाएँ आज जीविका समूह से जुड़ चुकी हैं। समूहों के माध्यम से गाँव की गरीब महिलाओं में सामाजिक जागरूकता आई है और इससे सरकार की सामाजिक योजनाओं को आखिरी पायदान पर बैठे लोगों तक पहुँचाने में मदद मिल रही है। वे अब गरीबी और अन्य बाधाओं को पार करते हुए विकास की राह पर अग्रसर हैं। इन सबके बावजूद आज भी अधिकांश ग्रामीण महिलाएँ इस कार्यक्रम से नहीं जुड़ पाई है जिसके कारण उनमें सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण का अभाव देखा जा रहा है। जब तक शत–प्रतिशत गरीब एवं वंचित महिलाओं को जीविका से जोड़कर उन्हें सामाजिक–आर्थिक स्तर पर सशक्त नहीं किया जायेगा तब तक जीविका के उद्देश्य

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kumar

पूरा नहीं हो सकेंगे। ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करने में जीविका की भूमिका का अध्ययन करना, प्रस्तुत शोध की प्रमुख समस्या है।

5.साहित्य का सिंहावलोकन

डॉ. एस. आर. रोसा के. डी. (2010) द्वारा लिखित शोध पुस्तक शीर्षक 'इम्पावर आफ वूमेन द इम्पेक्ट ऑफ इम्प्लायमेंट' महिला सशक्तिकरण पर वर्तमान शोधों के स्तर पर एक बार पुनर्विचार करने की प्रेरणा देती है। उनके शोध ने शोध के कुछ परम्परागत क्षेत्रों मे फिर रूचि जागृत की है, साथ ही नए शोध अवसरों के लिए नए द्वार खोले हैं। केरल की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि जो उनका शोध क्षेत्र है, पश्चिमी समाजों से काफी भिन्न है। यह तथ्य भारतीय महिलाओं पर पश्चिमी पूर्व धारणाओं के पुनर्परीक्षण को प्रोत्साहित करता है। इसके साथ ही भारतीय परिदृश्य में पश्चिमी शोध के निष्कर्षों को बिना सोचे समझे भारतीय समाज पर लागू करने को चुनौती देता है। इसके अलावा लेखक के अनुसार इस प्रकार के सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जिससे यह तथ्य सुनिश्चत हो सके कि सार्वभौमिक सामान्यीकरण गहन स्थानीय मामलों के लिए अनुकूल नहीं होते हैं।

पिट्टा उषा (2010) 'इम्पावरमेंट ऑफ वूमेन एंड सेल्फ हेल्प ग्रुप्स' पुस्तक स्वयं सहायता समूहों के द्वारा महिला सशक्तिकरण पर एक अध्ययन है। साख संस्थाओं की कार्यप्रणाली के पूर्व अनुभवों के आधार पर ऐसी मान्यता है कि वित्त बाजार में सरकारी हस्तक्षेप स्वयं सहायता पर आधारित होना चाहिए तथा इसका एकमात्र उद्देश्य 'महिला सशक्तिकरण' होना चाहिए। एक अत्यंत कारगर रणनीति जिसके सकारात्मक परिणाम यह है कि स्वयं सहायता समूह निर्धन महिलाओं की सहायता का एक अचूक बाण हैं। यह अध्ययन विशेष रूप से स्वयं सहायता समूहों की कार्यशैली पर भी प्रकाश डालता है, साथ ही यह विश्लेषण करता है कि किस

Dinesh Kumar

Shagufta Khanam
29/02/2024

प्रकार से स्वयं सहायता समूह सूक्ष्म वित्त के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाता है। यह अध्ययन इस विषय पर किए गए अन्य अध्ययनों, जो स्वयं सहायता समूहों का घरेलू आय पर प्रभाव तथा समूह के सदस्यों के जीवन स्तर का अध्ययन करते हैं, से भिन्न है क्योंकि यह विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों के प्रदर्शन का तुलनात्मक अध्ययन करता है।

यू. जेरीनाबी (2010) द्वारा लिखित शोध पुस्तक 'माइक्रो क्रेडिट मैनेजमेंट बाय वूमेन्स सेल्फ हेल्प ग्रुप्स' महिला स्वयं सहायता समूहों के सूक्ष्म ऋण प्रबंधन पर केन्द्रित है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में स्वयं सहायता समूहों का गठन करना तथा इन प्रयासों का स्वयं सहायता समूहों के संख्यात्मक तथा गुणात्मक आयामों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना है। इसके निष्कर्ष व खोज सरकार तथा गैर सरकारी संस्थानों को सूक्ष्म वित्त तथा व्यक्तियों के लिए योजना बनाने, सूक्ष्म तथा लघु उद्यमों के निर्माण करने में महिला उद्यमियों की भागीदारी का अध्ययन करने में काफी मददगार होंगे।

अब्दुल रहीम (2011) 'वूमेन इम्पावरमेंट थ्रू सेल्फ हेल्प ग्रुप्स' स्वयं सहायता समूह विशेषकर ग्रामीण महिलाओं में उद्यमशीलता तथा आत्मविश्वास बढाने में अत्यंत प्रभावशाली तंत्र के रूप में उभरकर आए हैं। यह पुस्तक महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक सशक्तिकरण के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कार्यक्रमों तथा उपायों की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराती है। साथ ही यह महिलाओं के सशक्तिकरण में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका का परीक्षण भी करती है, औपचारिक वित्त व्यवस्था तथा अनौपचारिक क्षेत्र के संयोजन की परिकल्पना भी प्रस्तुत करती है।

अरूणा शर्मा (2010) 'वूमेन' इम्पावरमेंट इन इंडिया– प्रोसेस एंड इंटर लिंकेज' पुस्तक स्वाधीनता के पूर्व भारत में महिलाओं की स्थिति पर पुनरावलोकन

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kumar

करती है, साथ ही स्वाधीनता के पश्चात् सरकार द्वारा महिला सशक्तिकरण के लिए प्रयासों का भी पुनः परीक्षण करती है। यह पुस्तक इस तथ्य का भी विश्लेषण करती है कि महिलाओं को मुख्य धारा से जोड़ने तथा समाज में लैंगिक न्याय स्थापित करने में ये प्रयास कितने सफल रहे हैं? पुस्तक में एक महिला सशक्तिकरण सूचक बनाया गया है, जो यह बताता है कि किसी निश्चित अवधि में विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की क्या स्थिति रही है?

6.शोध की प्रासंगिकता

इस दिशा में यह शोध या अनुसंधान विविध विषयों में गहन और सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करता है, तथा सामाजिक विकास मे सहायक है। इस प्रकार का शोध होने से लोगों के सामाजिक समस्या के निदान और निवारण में सहायक होगा। समाजशास्त्र एवं अन्य अनुशासन, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र में वर्तमान शोध का योगदान महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध व्यक्तित्व का बौद्धिक विकास और मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है। जीविका ने ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्थिति मे बदलाव ला दिया है। वे न केवल आत्मनिर्भर बन रही है बल्कि उनकी सामाजिक स्थिति भी पहले से बेहतर हुई है।

7.अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका की भूमिका से संबंधित है। हमने अध्ययन क्षेत्र के रूप में बिहार के बेगुसराय जिला का चयन किया है। अध्ययन का क्षेत्र बिहार राज्य के बेगुसराय जिला पर आधारित है। प्रस्तुत शोध के संचालन हेतु बेगुसराय जिला के बेगुसराय प्रखंड का चयन किया गया है। जीविका बेगुसराय जनवरी 2023 तक सभी पंचायत तक पहुंचने में सक्षम है। यह सभी गांवों में संस्थान बनाने में सक्षम है। जीविका द्वारा 27568 एसएचजी को बढ़ावा दिया गया है। कुल 331631 ग्रामीण गरीब परिवारों को एसएचजी में संगठित किया गया है। जीविका द्वारा 221 दिव्यांग

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kumar

एसएचजी को बढ़ावा दिया गया है. कुल 1026 दिव्यांग परिवारों को भी संस्थानों में शामिल किया गया है। 1996 एसएचजी को उच्च स्तरीय सेवाएँ प्राप्त करने में मदद के लिए ग्राम संगठनों का गठन किया गया। एसएचजी और वीओ को विनियमित करने, प्रबंधित करने और बेहतर सेवाएं प्रदान करने के उद्देश्य से जिले में 55 क्लस्टर स्तरीय संघ हैं।

माइक्रोफाइनांस

माइक्रोफाइनांस एक प्रकार की बैंकिंग सेवा है जो वंचित या कम आय वाली आबादी को प्रदान की जाती है, जिनके पास अन्यथा औपचारिक बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच नहीं होती। यह एसएचजी सदस्यों को छोटे व्यवसाय शुरू करने के लिए सुरक्षित रूप से छोटे ऋण लेने की अनुमति देता है। पिछले कुछ वर्षों में जीविका द्वारा प्रचारित माइक्रोफाइनेंस गतिविधियां विकसित हुई हैं और अब न केवल क्रेडिट सेवाएं बल्कि बीमा, अन्य सेवाएं भी एसएचजी सदस्यों को प्रदान की जा रही हैं। 15 वर्षों से अधिक के जीविका परिचालन से पता चलता है कि गरीब अपने ऋण चुकाते हैं और यदि उन्हें उचित दरों पर ऋण मिल सके तो वे मासिक बकाया का भुगतान करने को तैयार हैं। यह व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है कि गरीबी को कम करने के लिए वित्तीय सेवाएं आवश्यक हैं और जीविका बेगुसराय यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि सभी एसएचजी सदस्यों को एक सभ्य जीवन जीने के लिए वित्तीय सेवाएं मिलें। यह 2013 से काम कर रहा है और धीरे–धीरे वित्तीय समावेशन में प्रगति की है।

पशु

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आकार देने में पशुधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके महत्व को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि देश की कुल कृषि जीडीपी में पशुधन का योगदान 25.6 प्रतिशत है। जीविका बेगुसराय मुर्गी पालन पर काम कर रही है, जिसमें तीन मदर यूनिट पहले से ही तीन ब्लॉकों– बखरी, मटिहानी और बछवाड़ा में काम कर रही हैं। तीन ब्लॉकों में 3 मातृ इकाइयां 180'3=540 एसएचजी सदस्यों को आजीविका सृजन और उनके परिवार के सदस्यों को पोषण संबंधी आवश्यकताएं प्रदान करने में मदद कर रही हैं। मत्स्य पालन पर भी चल रहा काम जिले में मत्स्य पालन का कार्य शुरू करने के लिए जिला प्रशासन द्वारा जीविका को 10 तालाब आवंटित किये जा रहे हैं.

फार्म– पीजी और फसलें

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kum

फार्म थीम के तहत जीविका दीदियों को प्रशिक्षण दिया जाता है कि उत्पादकता कैसे बढ़ाई जा सकती है। ग्राम संसाधन व्यक्ति और कर्मचारियों द्वारा जमीनी स्तर पर एक्सा–इंटरक्रॉपिंग, एसआरआई और एसडब्ल्यूआई तकनीकों पर चर्चा की जाती है। समय–समय पर कृषि प्रबंधक द्वारा समुदाय और कैडरों के साथ खेती के बारे में नई तकनीकों और अंतर्दृष्टि पर चर्चा की जाती है। जीविका दीदियों को फसल सघनीकरण प्रणाली पर प्रशिक्षित किया जाता है और उन्हें दालों की खेती के लिए लाइन बुआई विधि का उपयोग करना सिखाया जाता है। मशरूम की खेती के लिए जीविका दीदियों को स्वयं उपभोग के साथ–साथ बेचने के लिए सीप उगाना सिखाया जाता है।

बेगूसराय में 64 कृषि उत्पादक समूह का गठन किया गया है. 86964 से अधिक परिवार किचन गार्डन का अभ्यास कर रहे हैं। जिले में और भी पीजी खोलने की योजना है। 179677 परिवार जीविका की किसी न किसी कृषि गतिविधि में शामिल हैं।

कस्टम हायरिंग सेंटर–बेगूसराय जिले में सत्ताईस कस्टम हायरिंग सेंटर कार्यरत हैं। ये कस्टम हायरिंग सेंटर जिले की 10000 से अधिक महिला किसानों को समय पर मशीन सहायता प्राप्त करने और खेती में इनपुट लागत को कम करने में मदद कर रहे हैं।

गैर कृषि

हाल के वर्षों में गैर–कृषि क्षेत्र को कई कारणों से बहुत मान्यता मिली है जैसे कि यह अनियमित प्रवासन पर रोक लगाता है और इसमें ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार पैदा करने की क्षमता है। यह भी पाया गया है कि ग्रामीण समाज गैर–कृषि गतिविधियों में अधिक गहनता से भाग लेते हैं और इससे सामाजिक गतिशीलता बढ़ाने में मदद मिलती है।

जीविका बेगुसराय कई स्थानीय गैर–कृषि आधारित उद्यमों जैसे बांस कला, सिक्की, कला और शिल्प आदि को बढ़ावा दे रहा है। 05 ग्रामीण बाजार (ग्रामीण खुदरा दुकान) बेगुसराय जिले के बलिया, साहेबपुर कमाल, बखरी, बरौनी और गढ़पुरा ब्लॉक में चल रहा है। यह जीविका का बी–2–बी उद्यम है। यह जीविका दीदियों को वास्तविक उत्पाद प्रदान करता है जो उस ग्रामीण बाजार के शेयर धारक हैं और किराना दुकान के मालिक हैं। बेगुसराय में कुल अड़तालीस गैर–कृषि उत्पादक समूह हैं। 70413 सूक्ष्म उद्यम विकसित किये गये हैं। एक

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kumar

निर्माता कंपनी–'धन्यक महिला जीविका प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड' बेगुसराय में सफलतापूर्वक चल रही है। बेगूसराय जिले में कुल 05 डीकेआर एवं 01 सिलाई इकाई भी कार्यरत है।

8.अध्ययन का उद्देश्य

यह एक शाश्वत सत्य है कि किसी भी समाज का वर्त्तमान अपने भूत के कुछ सिद्धान्तों द्वारा निर्धारित होता है। उसी परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका की भूमिकाका विश्लेषण करना है। उपरोक्त अध्ययन से संबंधित उद्देश्य निम्नलिखत है–

(i) जीविका के उद्देश्य का अध्ययन करना।

(ii) महिला सशक्तिकरण की अवधारणा का मूल्यांकन करना।

(iii) ग्रामीण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्टभूमि में बदलाव लाने मे जीविका के प्रभाव का अध्ययन करना।

(iv) ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका की भूमिका का आकलन करना।

9.उपकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन को वैज्ञानिक आधार पर निर्देशित दिशा की ओर ले जाने हेतु कुछ उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया और इन्ही उपकल्पनाओं को उत्तरदाताओं की सहायता से वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणीकृत करने का प्रयास किया जायेगा। प्रस्तुत अध्ययन की प्रमुख उपकल्पनाएँ निम्नलिंखित है :–

(i) महिलाओं की आर्थिक एवं सामाजिक सशक्तीकरण के लिए जीविका मिशन का गठन किया गया है।

(ii) सशक्तिकरण अभियान के रूप में आत्म–सशक्तिकरण की प्रक्रिया और पेशेवर समर्थन दोनों को संदर्भित करता है, जो उन्हें शक्तिहीनता और प्रभाव की

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kum

कमी की भावना को दूर करने और अपने संसाधनों को पहचानने और उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

(iii) जीविका से जुड़कर ग्रामीण महिलाओं ने अपनी आय को बढ़ाया और अपनी आर्थिक एवं सामाजिक हैसियत को हर तरह से संवारा है।

(iv) जीविका से जुड़कर ग्रामीण महिलाओं मे आर्थिक निर्भरता बढ़ी है।

10.शोध पद्धतिशास्त्र

शोध को पूर्ण करने के लिए शोध–प्रारूप की आवश्यकता होती है। इसके अन्तर्गत शोध से सम्बन्धित मौलिक प्रश्न, समस्या, उपकल्पना, निदर्श चयन की प्रक्रिया, सारणीयन इत्यादि शामिल हैं। प्रस्तुत शोध का प्रारूप अन्वेषात्मक सह वर्णनात्मक शोध–प्रारूप पर आधारित है।

तथ्य संकलन

प्रस्तुत शोध में तथ्य संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का प्रयोग किया जायेगा। प्राथमिक स्रोत का प्राविधिक आधार साक्षात्कार–अनुसूची होगा। द्वितीयक स्रोत के आधार सरकारी प्रलेख और सांख्यिकी,गैर–सरकारी प्रलेख सांख्यिकी, उपलब्ध प्रलेखन सामग्री का प्रयोग, ऐतिहासिक स्रोत, अन्तर्वस्तु विश्लेषण, पूर्व के शोधकार्य आदि होगें।

अध्ययन का समग्र व निदर्श चयन

उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के द्वारा बिहार के बेगुसराय जिला के बेगुसराय प्रखण्ड का चयन किया गया है। बेगुसराय प्रखण्ड के 25 पंचायत के कुल 67 गांव में से लॉटरी प्रणाली के आधार पर प्रत्येक गाँव से 2 स्वयं सहायता समूह का चयन किया जायेगा, इस प्रकार कुल 134 जीविका समूह में से प्रत्येक समूह से एक अध्यक्ष एवं एक सदस्य का चयन उत्तरदात्री क़े रूप में किया जायेगा। इस प्रकार 67 गाँव से कुल 268 उत्तरदात्रियों का चयन किया जायेगा। चयनित 268 उत्तरदात्रियों के ऊपर

Shogufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Ku

सम्पूर्ण सर्वेक्षण संचालित किया जायेगा और साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उनसे अध्ययन से संबंधित प्रश्नों पर तथ्य के रूप में इनकी प्रतिक्रियाएं संकलित की जायेंगी।

शोध कार्य के लिए उपयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका की भूमिकासे संबंधित है। इस शोधकार्य हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया जाना है। अतः साक्षात्कार अनुसूची इस शोधकार्य में प्रयुक्त होनेवाला प्रथम उपकरण होगा। द्वितीय शोधकार्य से जुड़े नैसर्गिक चित्रों, भू–दृश्यों, ग्रामीण महिलाओं के चित्रांकन उनके सामाजिक– आर्थिक आधार पर शोधकार्य करने हेतु कैमरे, मोबाइल, लेपटॉप जैसे उपकरण का प्रयोग वांछनीय होगा।

11. प्रस्तावित अध्यायीकरणः–

अध्याय प्रथम –**भूमिका**

अध्याय द्वितीय –**साहित्य का सिंहावलोकन**

अध्याय तृतीय –**शोध पद्धतिशास्त्र**

अध्याय चतुर्थ –**उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि**

अध्याय पंचम –**ग्रामीण महिला एवं जीविका**

अध्याय षष्ठ –**ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर जीविका का प्रभाव**

अध्याय सप्तम –**ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण में जीविका की भूमिका**

अध्याय अष्टम –**सारांश एवं निष्कर्ष**।

परिशिष्टः–

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

साक्षात्कार अनुसूची

Shagufta Khanam
29/02/2024

Dinesh Kumar

12.संदर्भ सूची:

1. सिन्हा, आर. के., फैमिदा शेख, मनोज सक्सेना, एन. के. खरे (2000)– स्व सहायता समूह–गठन प्रक्रिया एवं मागदर्शन उद्यमिता विकास केन्द्र मध्यप्रदेश (सेडमैप) भोपाल पृष्ठ क्रमांक–1
2. त्रिपाठी, मधुसूदन (2011) 'भारत में महिला श्रमिक' खुशी पब्लिकेशन, गाजियाबाद, पृष्ठ क्रमांक 11, 12
3. सिंह, निशांत (2011) स्त्री सशक्तिकरण एक मूल्यांकन, खुशी पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक–17
4. श्रीवास्तव, मनोज (2011) पंचायती राज के जरिए राजनीतिक रूप से सशक्त हुई महिलाऐं, कुरूक्षेत्र सितंबर वर्ष 57, अंक–11 पृष्ठ क्रमांक–13
5. Christabell, P.j. (2009)-' Women Empowerment Through Capacity Building', Concept Publishing Company, New Delhi (Preface)
6. Rosa, K.D. (2011) Empowerment of Women The Impact of Employment, Abhijeet Publications Delhi
7. Pitta, Usha (2010) Empowerment of Women and Self-Help Groups, Sonali Publications, New Delhi
8. Jerinabi, V. (2010) Micro Credit Management by Women's Self-Help Groups, Discovery Publishing House, New Delhi
9. Raheem Abdul A. (2011) Women Empowerment through Self-help Groups (SHGS), New Century Publications New Delhi (Preface)
10. Sreeramulu G. (2008) Empowerment of Women through Self-Help Groups, Kalpaz Publications, Delhi 36

Shagufta Khanam 29/02/2024

पर्यवेक्षिका

Dinesh kum
PAT-2021-22
Roll-E2219020

शोधार्थी